आप्तमीमांसा (फोल्डर नं. ००१०७०)

समन्तभद्र विरचित – अनुवादक-जुगलकिशोर मुख्तार

मुख्य टाइटल

ग्रन्थानुक्रम

समर्पण ---------- ५

प्रकाशकीय ---------- ७

धन्यवाद ----------८

अनुवादकीय वक्तव्य ---------- ९

प्रस्तावना ---------- १-४७

विषय-सूची ---------- ४९

मूलग्रन्थ – अनुवाद सहित ---------- १-१०७

प्रथम परिच्छेद

अनुवादकीय मंगल प्रतिज्ञा ----------२

देवागमादि विभूतियाँ आप्तगुरुत्वकी हेतु नहीं ----------३

बहिरन्तर्विग्रहादिमहोदय आप्त-गुरुत्वका हेतु नहीं ---------- ४

तीर्थंकरत्व भी आप्त-गुरुत्वका हेतु नहीं – तब गुरु कौन ---------- ५

दोषों तथा आवरणोंकी पूर्णतः हानि संभव ---------- ६

सर्वज्ञ-संस्थिति ---------- ७

निर्दोष सर्वज्ञ कौन और किस हेतु से ----------८

सर्वथैकान्तवादी आप्तोंका स्वेष्ट प्रमाण-बाधित---------- ९

सर्वथैकान्त-रक्तोंके शुभाशुभ कर्मादिक नहीं बनते ---------- ९

भावैकान्तकी सदोषता ---------- १५

प्रगाभाव-प्रध्वंसभावके विलोप में दोष ---------- १६

अन्योन्याभाव-अत्यान्ताभावके विलोपमें दोष ---------- १६

अभावैकान्तकी सदोषता ---------- १७

उक्त उभय और अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता ---------- १७

उक्त एकान्तोंकी निर्दोष-विधि व्यवस्था ----------१८

सत्-असत्-मान्यताकी निर्दोष विधि ---------- १९

उभय तथा अवक्तव्यकी निर्दोष मान्यतामें हेतु ---------- २०

अस्तित्वधर्म नास्तित्वके साथ अविनाभावी ---------- २०

नास्तित्वधर्म अस्तित्वके साथ अविनाभावी ----------२१

शब्दगोचर-विशेष्य विधि निषेधात्मक ----------२१

शेष भंग भी नय-योगसे अविरोधरूप ---------- २२

वस्तुका अर्थक्रियाकारित्व कब बनता है ---------- २२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्म-धर्ममें अर्थभिन्नता और धर्मोंकी मुख्य-गौणता ---------- २३
उक्त भगवती प्रक्रियाकी एकानेकादि विकल्पोंमें भी योजना ---------- २३
द्वितीय परिच्छेद
अद्वैत-एकान्तकी सदोषता ---------- २४
कर्मफलादिका कोई द्वैत नहीं बनता ---------- २५
हेतु आदिसे अद्वैत-सिद्धिमें द्वैतापत्ति ---------- २५
द्वैतके बिना अद्वैत नहीं होता ---------- २६
पृथक्त्व-एकान्तकी सदोषता ---------- २७
एकत्वके लोपमें सन्तानादिक नहीं बनते ---------- २७
ज्ञानको ज्ञेयसे सर्वथा भिन्न माननेमें दोषथ ---------- २८
वचनोंको सामान्यार्थक माननेमें दोष ---------- २८
उक्त उभय तथा अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता ---------- २९
पृथक्त्व-एकत्व एकान्तोंका अवस्तुत्व-वस्तुत्व ---------- ३०
एकत्व-पृथक्त्व एकान्तोंकी निर्दोष व्यवस्था ---------- ३०
विवक्षा तथा अविवक्षा सत्की ही होती है ----------३१
एक वस्तुमें भेद और अभेदकी अविरोध विधि ----------३१
तृतीय परिच्छेद
नित्यत्व-एकान्तकी सदोषता ---------- ३३
प्रमाण और कारकोंके नित्य होनेपर विक्रिया कैसी ---------- ३४
कार्यके सर्वथा सत् होने पर उत्पत्ति आदि नहीं बनती ---------- ३४
नित्यत्वैकान्तमें पुण्य-पापादि नहीं बनते ---------- ३६
क्षणिक-एकान्तकी सदोषता ---------- ३६
कार्यके सर्वथा असत् होनेपर दोषापत्ति ---------- ३७
क्षणिकैकान्तमें हेतु-फलभावादि नहीं बनते ---------- ३७
संवृति और मुख्यार्थकी स्थिति ---------- ३८
चतुष्कोटि-विकल्पके अवक्तव्य की बौद्ध मान्यता ---------- ३८
अवक्तव्यकी उक्त मान्यतामें दोष ---------- ३९
निषेध सत्का होता है असतका नहीं ---------- ४०
अवस्तुकी अवक्तव्यता और वस्तुकी अवस्तुता ---------- ४१
सर्वधर्मोके अवक्तव्य होनेपर उनका कथन नहीं बनता ---------- ४२
अवाच्यका हेतु अशक्ति, अभाव या अबोध ---------- ४३
क्षणिकैकान्तमें हिंसा हिंसकादि की विडम्बना ---------- ४४
नाशको निर्हेतुक माननेपर दोषापत्ति ---------- ४५
विरूपकार्यारम्भके लिए हेतुकी मान्यतामें दोष ---------- ४६
स्कन्धादिके स्थित्युत्पत्तिव्यय नहीं बनता ---------- ४७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्त उभय तथा अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता ---------- ४९
नित्य-क्षणिक एकान्तोंकी निर्दोष व्यवस्थाविधि ---------- ४९
उत्पाद-व्यय सामान्यका नहीं विशेषका होता है ---------- ५०
उत्पादादिकी भिन्नता और निरपेक्ष होनेपर अवस्तुता ---------- ५१
एक द्रव्यकी नाशोत्पादस्थिति में भिन्न भावोंकी उत्पत्ति ---------- ५२
वस्तुतत्त्वकी त्रयात्मकता ---------- ५३
चतुर्थ परिच्छेद
कार्य-कारणोंकी सर्वथा भिन्नताका एकान्त ---------- ५४
उक्त भिन्नतैकान्तमें दोष ---------- ५६
अनन्यता-एकांतकी सदोषता ---------- ६०
कार्यकी भ्रान्तिसे कारणकी भ्रांति तथा उभयाभावादिक ---------- ६१
कार्य-कारणादिका एकत्व माननेपर दोष ---------- ६१
उक्त उभय तथा अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता ---------- ६३
एकता और अनेकताकी निर्दोष व्यवस्था ---------- ६३
पंचम परिच्छेद
सिद्धिके आपेक्षिक-अनापेक्षिक एकान्तोंकी सदोषता ---------- ६६
उक्त उभय तथा अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता ---------- ६८
उक्त अपेक्षादिक एकान्तोंकी निर्दोष-व्यवस्था ---------- ६८
षष्ठम परिच्छेद
सर्वथा हेतुसिद्ध तता आगमसिद्ध एकान्तोंकी सदोषता ---------- ६९
उक्त उभय तथा अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता ---------- ७०
हेतु तथा आगमसे निर्दोष सिद्धिकि दृष्टि ---------- ७१
सप्तम परिच्छेद
अन्तरंगार्थता-एकान्तकी बौद्धमान्यता सदोष ---------- ७२
विज्ञप्ति-मात्रताके एकान्तमें साध्य-साधनादि नहीं बनते ---------- ७३
बरिरंगार्थता-एकान्तकी सदोषता ---------- ७४
उक्त उभय तथा अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता ---------- ७५
उक्त दोनों एकान्तोंमें अपेक्षा भेदसे सामंजस्य ---------- ७५
जीवशब्द संज्ञा होनेसे सबाह्यार्थ है ---------- ७६
संज्ञात्व-हेतुमें व्यभिचार-दोषका निराकरण ---------- ७७
संज्ञात्व-हेतुमें विज्ञानादैतवादी की शंकाका निरसन ---------- ७८
बुद्धि तता शब्दकी प्रमामता और सत्यानृतकी व्यवस्था बाह्यार्थके होने न होने पर
निर्भर ---------- ८०
अष्टम परिच्छेद
दैवसे सिद्धिके एकान्तकी सदोषता ----------८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पौरुषसे सिद्धिके एकान्तकी सदोषता ---------- ८२
उक्त उभय तथा अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता ---------- ८४
देव पुरुषार्थ एकान्तोंकी निर्दोष-विधि ---------- ८५
नवम परिच्छेद
परमे दुःख-सुखसे पाप पुण्यके एकान्तकी सदोषता ---------- ८५
स्वम दुःख-सुखसे पुण्य-पापके एकान्तकी सदोषता ---------- ८८
उक्त उभय तथा अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता ---------- ९०
पुण्य पापकी निर्दोष व्यवस्था ---------- ९०
दशम परिच्छेद
अज्ञानसे बन्धका और अल्पज्ञानसे मोक्षका एकान्त ---------- ९३
उक्त उभय और अवक्तव्य एकान्तोंकी सदोषता ---------- ९४
अज्ञान-अल्पज्ञानसे बन्ध मोक्षकी निर्दोष-विधि ---------- ९४
कर्मबन्धानुसार संसार विविधरूप और बद्ध जीव शुद्धि-अशुद्धिके भेदसे दो बेदरूप ---------- ९४
शुद्धि-अशुद्धि दो शक्तियोंकी सादि-अनादि व्यक्ति ---------- ९५
प्रमाणका लक्षण और उसके भेद ---------- ९६
प्रमाणोंका फल ---------- ९६
स्यात्त्रिपातकी अर्थ व्यवस्था ---------- ९७
स्याद्वाद और केवलज्ञानमें भेद निर्देश ---------- ९९
नय हेतुका लक्षण ---------- ९९
द्रव्यका स्वरूप और भेदोंकी सूचना ---------- १००
निरपेक्ष और सापेक्ष नयोंकी स्थिति ---------- १००
वस्तुको विधि-वाक्यादि-द्वारा नियमित किया जाता है ---------- १०१
तदतद्रूप वस्तुको तद्रूप ही कहनेवाली वाणी सत्य नहीं---------- १०२
वाक्-स्वभाव निर्देश, तद्भिन्न वाक्य अवस्तु ---------- १०३
अभिप्रेत-विशेषकी प्राप्तिका सच्चा साधन ---------- १०४
स्याद्वाद संस्थिति ---------- १०५
आप्त मीमांसाका उद्देश्य ---------- १०६
अनुवादकीय अन्त्य मंगल ---------- १०६
कारिकानुक्रमणिका ---------- १०८
प्रमुखशब्द-सूची ---------- १११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org